अध्याय - 1
सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना :-

विश्व मानव इतिहास में इतने अधिक सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन सम्भवतः पहले कभी नहीं अनुभव किये गये जितने कि बीसवीं शताब्दी में हुये। भारत वर्ष में नगरीकरण का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। मथुरा, अवन्तिकापुरी, द्वारिका, काशी, प्रयाग, महाबलीपुरम् एवं अयोध्या आदि नगर प्राचीन कालीन इतिहास के विकास की कहानी को दोहराते हैं, परन्तु वास्तव में देखा जाये तो नगरीकरण वर्तमान शताब्दी की देन है।

पृथ्वी पर विकास करने वाला लगभग समस्त जनसमुदाय किसी न किसी रूप में नगरों से अवश्य सम्बन्धित है क्योंकि नगर मनुष्य की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक सभी तरह की क्रियाओं के केन्द्र बिन्दु होते हैं। अतएव नगरों के माध्यम से ही भिन्न–भिन्न प्रदेशों के बीच वस्तुओं एवं विचारों का सम्बन्ध एवं संगठन स्थापित होता है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप प्रायः सभी प्रदेशों में नगरीय क्षेत्र तथा उनकी जनसंख्या में विकास के साथ उनके सापेक्षिक महत्व में इतनी वृद्धि हुई है कि नगरीकरण को आर्थिक, सामाजिक प्रगति का सहभागी और सम्पन्नता का सूचक माना जाता है। नगर मानव की आर्थिक क्रियाओं के केन्द्र स्थल होते हैं।

नगरीकरण की प्रक्रिया बहुआयामी है और एक या दो चरों के माध्यम से उसका विश्लेषण सम्भव नहीं है। अनेक नगर नियोजक, भूगोलवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, वैज्ञानिक, अभियंता एवं वास्तुकार नगर के विविध आयामों का विश्लेषण कर समस्याओं का हल ढूंढने में लगे हुये हैं किन्तु इनका एक स्थानिक आयाम भी है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत

नगरों की अवस्थिति, ग्रामीण–नगरीय सम्बन्ध, जनसंख्या एवं यातायात वितरण प्रतिरूप, पारिस्थितकी एवं आर्थिक–सामाजिक संरचना के प्रतिरूपों का विश्लेषण किया जाता है।

सामान्यतया शहर या नगर उन स्थानों को कहा जाता है जहां मानव जाति के बढ़ते हुये समूहों का तेजी से एकत्रीकरण होता रहता है। इसका अर्थ बहुत ही स्पष्ट है क्योंकि इसके सहारे गांवों और नगरों के भेद का साफ–साफ पता चल जाता है परन्तु नगरों के लिये हम जिस कसौटी का प्रयोग करते हैं वह देशकाल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तनशील है। नगर की संकल्पना ऐतिहासिक और भौगोलिक अवस्थिति के अनुसार बदलती है। यद्यपि नगर और गांव का अन्तर अपरिवर्तनीय है। प्रत्येक सभ्यता की नगर के विषय में अपनी संकल्पना होती है जैसे प्राचीनकाल में उत्तम के नगर वे थे जहां सिर्फ कृषक रहते थे परन्तु आज के नगर उनसे पूर्णतः भिन्न हैं।

यद्यपि नगर शब्द काफी प्राचीन है जैसा कि स्मेल्स महोदय ने कहा है कि ''नगर उतने ही प्राचीन है जितनी की मानव सभ्यता'' लेकिन नगरीय भूगोल का क्रमबद्ध अध्ययन बीसवीं शताब्दी की ही देन है। इससे पूर्व के विचारकों ने अपने को नगरीय अधिवासों के स्थान पर अवस्थिति सम्बन्धी पक्षों तक ही सीमित रखा है। इस प्रकार के विचारक भूगोल को अन्य शाखाओं की भांति कुछ विशिष्ट नगरों की स्थिति, संरचना तथा नगरीय भूमि के सम्बन्धों पर अधिक जोर देते रहे हैं परन्तु वर्तमान समय में नगरीय भूगोल एक विशिष्ट ज्ञान की शाखा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है और इसके विभिन्न पक्षों का व्यापक दृष्टि से अध्ययन किया जा रहा है। वर्तमान समय में भारत वर्ष में नगरीकरण की प्रक्रिया काफी तेजी से चल रही है। बड़े कस्बे, नगरों का रूप धारण कर रहे हैं जबकि बड़े आकार के गांव क्रमशः नगरों का रूप धारण करते जा रहे हैं। नगर

धीरे–धीरे महानगर बनते जा रहे हैं। भारत में ही नहीं वरन् विश्व के सभी महानगरों में जनसंख्या का संकेन्द्रण बढ़ता जा रहा है जिससे उनमें अनेकों समस्यायें जन्म ले रही हैं। विकसित राष्ट्रों की तुलना में पिछड़े एवं विकासशील राष्ट्रों की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक हो रही है क्योंकि उन देशों के महानगर दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ते जा रहे हैं जिससे उनमें समस्याओं आ अम्बार लगता जा रहा है। इन महानगरों में सामान्य जनता का जीना मुश्किल हो गया है। आवास समस्या, पेयजल की समस्या, सीवर एवं मलोत्सर्जन की समस्या, मलिन बस्तियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि, वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण की समस्या, अपराधों की समस्या आदि अनेकों प्रकार की समस्याओं में निरन्तर तेजी से वृद्धि हो रही है जिससे इन महानगरों में गम्भीर संकट पैदा हो रहे हैं।

महानगरों में बढ़ती हुई समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुये हमारी सरकार अब लघु एवं मध्यम आकारीय नगरों के विकास हेतु IDSMT योजना पर तेजी से कार्य कर रही है। अतः भविष्य में इन नगरों का विकास हो सकेगा ऐसी आशा की जाती है।

गांवों में प्रायः सुख–सुविधाओं एवं सुरक्षा का अभाव होता है तथा अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि हो रही है जिससे लोग रोजी–रोटी की तलाश में नगरों की ओर पलायन करते हैं जिसके कारण नगरों की आबादी में तेजी से वृद्धि हो रही है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नगरीय जनजीवन पर पड़ रहा है। अतः जब तक नगरों के विकास के साथ–साथ वहां रोजगार, शिक्षा, आवास, जल, जल–निकास, सीवर, यातायात आदि का उचित प्रबन्ध नहीं होगा तब तक शहरों में गरीबी, बेरोजगारी, मलिन बस्तियां और प्रदूषण बढ़ेगा। अतः नगरों की अप्रत्याशित वृद्धि की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों का संतुलित आर्थिक विकास हो जिससे नगरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति पर अंकुश लग सके, साथ ही नगरों के

सुनियोजित विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे नगरीय समस्याओं को हल किया जा सके।

वर्तमान समय में कुछ विचारक तथा शोधकर्ता इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं इसलिये उनके कार्यो की अनदेखी नहीं की जा सकती है। इन विद्वानों ने अवस्थिति सिद्धान्तों का विकास और परिमार्जन किया है। इनमें गाल्पिन, जॉनसन, बैरी, गैरीसन एवं फ्रीडमैन के कार्य उल्लेखनीय हैं। अन्य शोधकर्ताओं में रौन्डीनेल्ली, ब्राम्ली एवं हरद्रुआय के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन विद्वानों ने प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक आधारों पर स्पष्ट किया कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को प्रोत्साहित करने में छोटे नगर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

1.2 नगरों की अवधारणा :-

नगरीय अधिवास उतने ही पुराने होते हैं जितनी भारत समाज की सभ्यता। नगरों की अवधारणा में उत्तरोत्तर परिवर्तन होता रहा है। नगरों की प्राचीन अवधारणायें बदल चुकी हैं। इसलिये नगर को परिभाषित करना आवश्यक हो गया है। यद्यपि नगर की परिभाषा आज भी सामान्य नहीं हो पाई है क्योंकि नगर की अवधारणा में अलग–अलग देशों में अन्तर पाया जाता है। नगरीय अधिवास मुख्यतः गैर प्राथमिक कार्यो में संलग्न लोगों की स्थाई सतत् निर्मित सुसम्बद्ध आवासीय और कार्य सम्पादन की बस्ती है जो अनेक आकार प्रकार की होती है।

आज भी नगरों की संकल्पनाएं पर्याप्त भिन्न है। जर्मनी में 'स्टाट' शब्द और अंग्रेजी में 'टाउन' एवं 'सिटी' शब्दों का प्रयोग मिलता है। फ्रेंच में 'सिटी' शब्द का प्रयोग होता है जिसका सामाजिक और राजनैतिक आधार होता है। स्वीडन में 'स्टैडेन' का अर्थ नगरों का ऐसा वर्ग होता है जिसके नीचे नगरों के दो अन्य वर्ग होते हैं वे हैं बाजार नगर और नगर

पालिका केन्द्र। स्वीडन में नगर के अन्तर्गत वे सभी केन्द्र हैं जहां के निवास गृह 200 मीटर से अधिक दूरी पर स्थित न हों ओर जनसंख्या 200 से कम न हो। ऐसे जिलों को वहां नगर क्षेत्र कहा जाता है। स्वीडन में जिन केन्द्रों के लिये 'गांव' शब्द का प्रयोग होता है उन्हें नार्वे में 'नगर' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

भारतीय जनगणना विभाग ने समय–समय पर नगर को परिभाषित किया है। 1981 में जनगणना विभाग ने नगरों को निम्न प्रकार से परिभाषित किया –

1. वे सभी स्थान जिसमें नगर पालिका, नगर निगम, छावनी या नोटीफाइड नगर क्षेत्र या इसके समकक्ष की स्थानीय प्रशासन की कोई इकाई हो, नगर कहे जायेंगे।
2. अन्य सभी स्थान जो निम्नलिखित मापदण्डों को संतुष्ट करते हैं –
   - अ. 5000 की न्यूनतम जनसंख्या।
   - ब. पुरुषों की कार्यशील जनसंख्या का कम से कम 75 प्रतिशत भाग कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यो में लगा हो।
   - स. जनसंख्या का घनत्व कम से कम 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग मील या 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो।
   - द. अन्य कोई स्थान जो उपयुक्त विशेषताओं में समावर्ती है लेकिन प्रान्तीय जनगणना अधीक्षक के अनुसार स्पष्ट नगरीय सुविधायें तथा विशेषतायें रखता हो, नगर माना जा सकता है या जो न रखता हो उसे नगरों की सूची से निकाला जा सकता है।

नगर की कितनी ही परिभाषायें तथा विशेषतायें बतलाई गई हैं। यदि महत्वपूर्ण शब्दकोषों में 'सिटी' या 'टाउन' का अर्थ ढूंढे तो हम देखेंगे कि इस शब्द के कितने अर्थ हैं और अलग–अलग देशों में किस तरह अलग–अलग अर्थो में इनका प्रयोग हो रहा है। मोटे तौर पर बड़े गांवों को जहां बाजार हैं और नगर पालिका स्थापित हो चुकी हैं 'नगर'

अथवा 'शहर' कहा जाता है, और बड़े शहरों को जिनकी आबादी काफी अधिक हो तथा जहां की सीमा कानून द्वारा निर्धारित कर दी गई हो, महानगर कहलाते हैं।

1.3 सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

भूगोल की एक प्रतिष्ठित शाखा के रूप में नगरीय भूगोल का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ। विश्व में हुये नगरीय अध्ययनों की विस्तृत समीक्षा डिकिन्सन[1], टेलर[2], मेयर[3] और बी0जे0एल0 बेरी[4] ने प्रस्तुत की है। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में अनेक भूगोलवेत्ताओं ने नगरीय क्षेत्रों तथा नगरीय समस्याओं की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया। 1907 में मार्क जैफरसन[5] तथा पैट्रिक गैडिस ने नगरीय अध्ययनों की शुरूआत की। 1915 में पैट्रिक गेडिस महोदय ने नगरों के विकास को सन्नगर (Conurbation) नाम से सम्बोधित किया।

वाल्टर क्रिस्टालर[6] ने 1933 में, वर्गेस ने 1927 में, 1949 में होमर हॉयट आदि विद्वानों ने नगरों से सम्बन्धित स्थानीयकरण के सिद्धान्त प्रस्तुत किये। 1949 में ग्रिफ्रिथ टेलर[7] ने 'नगरीय भूगोल' नामक ग्रंथ की रचना की। 1954 में क्लार्क[8] और ईवान्स ने नगरों की पारस्परिक दूरियों पर निकटतम पड़ोसी विधि का प्रतिपादन किया। नगरीय भूगोल पर जहां अनेकों शोध पत्र प्रकाशित हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर बहुमूल्य ग्रंथों को भी महत्व दिया गया है। इनमें थामस, हरबर्ट, टेलर, नार्थम, कार्टर, ब्राम्ली के योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भारत में नगरीय भूगोल के अध्ययन की शुरूआत 1955 में हुई है जिसका श्रेय बी0एच0यू0 के निवर्तमान प्रोफेसर रामलोचन सिंह[9] को जाता है। उन्होंने वाराणसी नगर पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत करके भूगोलवेत्ताओं का ध्यान भारत के नगरों के अध्ययन की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने विभिन्न नगरों पर अपने शोध–पत्र एवं ग्रंथ प्रस्तुत

करके नगरीय भूगोल के महत्व को स्थापित किया। इसके बाद डा0 उजागर सिंह का इलाहाबाद नगर का अध्ययन सामने आया।

1960 के बाद भारत के अनेक भूगोलवेत्ताओं ने विभिन्न नगरों पर अपने ग्रंथ एवं शोध–पत्र प्रस्तुत किये जिनमें प्रो0 आर0एल0 द्विवेदी, प्रो0 मंजूर आलम, प्रो0 बोस[10], बी0एल0एस0पी0 राव[11], प्रो0 आर0पी0 मिश्रा, प्रो0 एस0एल0 कायस्थ, प्रो0 एच0एन0 मिश्रा[12], प्रो0 के0एन0 सिंह[13], प्रो0 पी0एस0 तिवारी, हरिहर सिंह, पी0डी0 महादेव, मुखर्जी, के0वी0 सुन्दरम्[14], एम0एस0 मसूद, प्रो0 आर0के0 विश्वकर्मा[15] आदि के ग्रंथ एवं शोध–पत्र बहुत ही महत्वपूर्ण हैं जिनमें नगरों की आकारिकी, स्थानिक तंत्र, प्रकार्यात्मक तंत्र, नगरीय प्रभाव क्षेत्र, ग्रामीण–नगरीय अनुबन्धन, नगर नियोजन एवं नगरों के उद्भव और विस्तार आदि विभिन्न नगरीय आयामों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

नगरीय भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मानव है क्योंकि भूगोलवेत्ता नगरों को मानवनिर्मित अधिवास मानता है। वह नगर विकास के लिये सभी भौगोलिक पक्षों का अध्ययन करता है। वह नगर के ऐतिहासिक, सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं का अध्ययन करता है जिन्होंने नगर को बसाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

1.4 अध्ययन क्षेत्र के चयन का आधार :-

प्रस्तावित अध्ययन के महत्व को देखते हुये गंगा–यमुना दोआब में स्थित औरैया जनपद के नगरीय केन्द्रों को अध्ययन हेतु चयन किया गया है। औरैया जनपद में मुख्यतः सात नगरीय केन्द्र औरैया, विधूना, अजीतमल (बाबरपुर), दिबियापुर, फफूंद, अटसू और अछल्दा हैं। इनमें से औरैया सबसे बड़ा नगर है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार इन नगरों की जनसंख्या क्रमशः 64598, 24784, 24550, 20602, 15841, 10602, 8361 है। जनसंख्या के आकार के हिसाब से ये नगर लघु एवं मध्यम आकाकीय नगर हैं।

जनपद के ये नगर बड़ी तेजी से विकास कर रहे हैं। जनपद का मुख्यालय औरैया एवं दिबियापुर नगरों के मध्य ककोर में स्थित है।

जनपद के नगरीय केन्द्रों का कानपुर, आगरा, लखनऊ, बरेली, मथुरा, जयपुर, अलीगढ़, मेरठ, गोरखपुर, वाराणसी, बुलन्दशहर, सहारनपुर, दिल्ली आदि नगरों से सड़क मार्ग द्वारा सीधा सम्पर्क है। इसके साथ ही जनपद के दिबियापुर एवं अछल्दा नगर दिल्ली–हाबड़ा रेलमार्ग द्वारा उत्तर–पश्चिम भारत के विभिन्न नगरों से जुड़े हुये हैं। उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्र में स्थिति होने के कारण इन नगरों के चारों ओर सम्पन्न कृषि क्षेत्र हैं। अतः चारों ओर फैले ग्रामीण क्षेत्र के लिये ये महत्वपूर्ण नगर केन्द्र है। महानगर एवं ग्राम के मध्य स्थित मध्यम आकारीय नगर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। लघु एवं मध्यम आकार के नगरों के महत्व को ध्यान में रखते हुये प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में औरैया जनपद के नगरीय केन्द्रों का अध्ययन किया जायेगा। इसलिये इन नगरों का अध्ययन करना न केवल सार्थक है अपितु नितान्त आवश्यक है।

सारणी क्रमांक 1.1
जनपद औरैया : नगरीय परिदृश्य, वर्ष 2001

क्र0	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	जनसंख्या प्रतिशत
1	औरैया	64740	38.31
2.	बिधूना	24789	14.67
3.	अजीतमल	24549	14.53
4.	दिबियापुर	20595	12.19
5.	फफूंद	15340	09.08
6.	अटसू	10593	06.27
7.	अछल्दा	8361	04.95
	कुल योग	**168967**	**100.00**

1.5 अध्ययन के उद्देश्य :-

नगरों के महत्व को दृष्टिगत रखकर मेरा यह उद्देश्य है कि एक पिछड़े एवं दस्यु प्रभावित जनपद में स्थित नगरीय केन्द्रों का अध्ययन किया जाये और यह देखा जाये कि –

समस्याग्रस्त जनपद में इन नगरों की क्या स्थिति है? इन नगरों का उद्भव कैसे हुआ? नगरीकरण सम्बन्धी कौन सी विशिष्टतायें इन नगरों में विद्यमान हैं? परिवहन–तंत्र की क्या स्थिति है? इन नगरों का सामाजिक, आर्थिक आधार किस प्रकार का है? ये नगर कितने क्षेत्र को अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं? इनके विकास में कौन सी भौगोलिक बाधायें हैं? इस तरह इन नगरों के सम्पूर्ण स्थानिक तंत्र का ज्ञान हो जायेगा कि वह जनपद के सुनियोजित आर्थिक विकास में क्या मदद कर सकता है? अतः प्रस्तुत शोध–अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. नगरों के सन्दर्भ में जनपद की भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. जनपद के नगरीय केन्द्रों के उद्भव और विकास का अध्ययन करना।
3. जनपद के नगरों की जनसंख्या का अध्ययन और विश्लेषण करना।
4. नगरों के स्थानिक तंत्र का अध्ययन करना।
5. नगरों में मौजूद नागरिक सुविधाओं के प्रारूप का विश्लेषण करना।
6. जनपद के नगरों की प्रकार्यात्मक संरचना और पादानुक्रम की विवेचना करना।
7. ग्रामीण–नगरीय अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
8. जनपद के नगरों की समस्याओं का अध्ययन एवं उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
9. जनपद के नगरीय केन्द्रों के विकास हेतु नियोजन की रणनीति प्रस्तुत करना।

1.6 सम्बन्धित परिकल्पनायें :-

प्रस्तुत शोध कार्य में जनपद औरैया के नगरों का भौगोलिक

अध्ययन और विश्लेषण किया जायेगा। अतः औरैया जनपद के नगरीय केन्द्रों को दृष्टिगत रखते हुये इस शोध कार्य में निम्नांकित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है –

1. जनपद के नगर कोटि–आकार नियम का अनुसरण करते हैं।
2. जनसंख्या वृद्धि के साथ प्रकार्यात्मक इकाईयों की संख्या में वृद्धि हो रही है।
3. नगरीय केन्द्रों में प्रकार्य (Functions) बढ़ने से प्रकार्यात्मक इकाईयों की संख्या में वृद्धि होती है।
4. जनपद के नगरों का प्रभाव क्षेत्र उपभोक्ताओं के व्यवहार एवं उनकी पसन्द पर निर्भर करता है।

1.7 शोध विधितंत्र की विस्तृत रूपरेखा :-

औरैया जनपद के नगरों का विश्लेषण करने हेतु प्रश्नावली का निर्माण करके प्राथमिक स्रोत के आंकड़ों और तथ्यों को इकट्ठा किया गया है। नगरों में जाकर नगर पालिका, बाजार, प्रभाव–क्षेत्र, समस्यायें एवं प्रस्तुत नियोजन हेतु साक्षात्कार (सम्बन्धित अधिकारियों/नेता/जनता/प्रबुद्ध वर्ग) किया गया है। अतः इस तरह प्राप्त प्राथमिक स्रोत के आंकड़ों ने शोध का विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने में प्रभावकारी भूमिका अदा की है। द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सूचनायें और आंकड़ों का सारणीयन तथा विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों से उनका विश्लेषण एवं मानचित्रण आदि के द्वारा शोध का परिणाम ज्ञात किया जायेगा। इस प्रकार प्रस्तुत शोध–कार्य को पूर्ण करने में निम्नलिखित शोध–विधितंत्र का प्रयोग किया जायेगा –

1. आंकड़ों के संकलन का आधार :-

प्रस्तुत शोध–कार्य को पूर्ण करने में प्रश्नावली का निर्माण कर साक्षात्कार के द्वारा विभिन्न तथ्यों, सूचनाओं तथा आंकड़ों को संकलित किया गया है। इस तरह से आंकड़ों के संकलन में प्राथमिक स्रोत का प्रयोग किया गया है। अधिकांश सूचनायें स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित है।

द्वितीयक स्रोत से भी आंकड़ों का संकलन किया गया है। इस हेतु पुस्तकालय से प्राप्त जनगणना के आंकड़ों, सांख्यिकीय पत्रिका, औरैया जनपद से प्राप्त जनपद के विभिन्न प्रकार के आंकड़े, नगर पालिका, नगर पंचायतों से प्राप्त आंकड़े, जिला उद्योग केन्द्र से प्राप्त आंकड़े, लीड बैंक की रिपोर्ट से उपलब्ध आंकड़ों को परिकलित एवं सारणीबद्ध कर आधुनिक शोध तकनीकों द्वारा परिणाम ज्ञात किया गया है।

नगर और नगरीय भूगोल पर उपलब्ध साहित्य का अवलोकन कर उसकी समीक्षा प्रस्तुत की जायेगी। नगरों का इतिहास जानने के लिये जिले के गजेटियर का गहन अध्ययन किया गया है। इसके अलावा नगरों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार का प्रकाशित साहित्य, पुस्तकें, पत्रिकायें, समाचार–पत्र, शोध–ग्रन्थ एवं स्वयं किये गये नगरीय सर्वेक्षण का अध्ययन कर नवीनतम निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है।

2. पुस्तकालय से प्राप्त सामग्री : -

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न पुस्तकालयों से सहायता प्राप्त की गई है और सम्बन्धित विषय का गहन अध्ययन किया गया है। बद्री विशाल महाविद्यालय के पुस्तकालय के अलावा औरैया जनपद के डी0एम0 की लाइब्रेरी, जिला पुस्तकालय, पब्लिक लाइब्रेरी इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी आदि विभिन्न पुस्तकालयों से पुस्तकीय सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त किया गया है। नगरों पर, अधिवास पर, नगरीय भूगोल पर हुये विभिन्न शोध–ग्रन्थों/पुस्तकों से प्राप्त सामग्री से शोध कार्य को पूर्ण बनाने में पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी होती है।

द्वितीयक स्रोत से प्राप्त आंकड़ों के संकलन और विश्लेषण में प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, भौगोलिक पत्रों एवं भूगोल

की शोध पत्रिकाओं का सहारा लिया गया है। द्वितीय स्रोत के आंकड़ों और तथ्यों के संकलन में निम्नलिखित प्रकाशित साहित्य से सहायता ली गयी है –

1. जनपद औरैया की जनगणना पुस्तिकायें।
2. जनपद का गजेटियर।
3. जनपद की सांख्यिकी पत्रिका के अंक।
4. जनपद की वार्षिक योजना के अंक।
5 लीड बैंक की रिपोर्ट।
6. टाउन डायरेक्ट्री – 1971, 1981, 1991, 2001।
7. जनरल पापुलेशन टेबुल्स, उत्तर प्रदेश 1981, 1991, 2001
8. जिला उद्योग केन्द्र की औद्योगिक रिपोर्ट।
9. नगर पालिका/नगर पंचायत के दस्तावेज।
10. मुख्य विकास अधिकारी, औरैया से नियोजन/मास्टर प्लान की रिपोर्ट।
11. स्थानीय/क्षेत्रीय समाचार पत्र।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध–कार्य को पूर्ण करने में आधुनिक कम्प्यूटर तकनीकों का प्रयोग किया गया है।

3. प्रयोगशाला सम्बन्धी कार्य :-

सांख्यिकी विधियों का प्रयोग :-

प्रयोगशाला से सम्बन्धित शोध कार्य के अन्तर्गत आंकड़ों का विश्लेषण, सारणीयन, मानचित्रण, आरेखन एवं शोध प्रबन्ध लिखने का कार्य आदि आता है। उपलब्ध आंकड़ों को सांख्यिकीय और मात्रात्मक विधियों के माध्यम से परिकलित किया गया है जिससे अनेक नये तथ्य उभर कर सामने आये है –

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में जिन महत्वपूर्ण सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है उनमें कुछ निम्नांकित हैं –

1. मानक विचलन (Standard Deviation)।

2. सह–सम्बन्ध गुणांक (Co-efficient of Co-relation)।
3. कनैक्टीविटी इनडैक्स (Connectivity Index)।
4. डिटूर इन्डैक्स (Detour Index)।
5. रैंक साइज रूल (Rank size Rule)।
6. निकटतम पड़ोसी विधि (Nearest Neighbour Analysis)।
7. केन्द्रीयता (Centrality)।
8. पादानुक्रमता तकनीकें (Settlement Index, Scalogram Method, Weightage Index)।
9. गुरूत्व मॉडल (Gravity Model)।
10. विच्छेद बिन्दु तकनीक (Breaking Point Equation)।

आदि तकनीकों का प्रयोग एवं विश्लेषण किया गया है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर जो तथ्य प्राप्त किये गये हैं उनका प्रयोग निष्कर्षो को निकालने में किया गया है जिसके महत्वपूर्ण परिणाम सामने आये है।

प्रस्तुत अध्ययन में गौण आंकड़ों एवं सूचनाओं का संकलन विविध स्रोतों द्वारा प्राप्त किया गया है। संरचना, उच्चावच एवं अपवाह तंत्र की सूचनायें जनपद के गजेटियर से प्राप्त की गई हैं। इसी प्रकार भूमि उपयोग एवं जलवायु सम्बन्धी आंकड़ें प्रकाशित सांख्यिकीय पत्रिकाओं, बोर्ड ऑफ रेवेन्यू, लखनऊ, कलेक्ट्रेट औरैया एवं वेधशाला मैनपुरी से प्राप्त किये गये हैं। मृदा सम्बन्धी आंकड़ों को मृदा परीक्षण केन्द्र, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर से प्राप्त किया गया है। प्राकृतिक वनस्पति एवं वन सम्बन्धी आंकड़ें वन विभाग के अप्रकाशित प्रतिवेदनों से प्राप्त किये गये हैं।

भौगोलिक पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक पक्ष के अन्तर्गत अधिवास एवं जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़े 1991 एवं 2001 की जनगणना पुस्तकों से प्राप्त किये गये हैं। उच्चावच एवं अपवाह सम्बन्धी विशेषताओं का विश्लेषण भारतीय

सर्वेक्षण विभाग, देहरादून के द्वारा प्रकाशित 1:250,000 मापक वाले भू पत्रक 54N के आधार पर किया गया हैं। इसके अतिरिक्त अन्य उपयोगी मानचित्र जैसे सड़कों का वितरण –लो0नि0वि0, वनों का वितरण –वन विभाग आदि विभिन्न विभागों से प्राप्त कर उनका उपयोग किया गया है।

1.8 अध्याय योजना का प्रारूप :-

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ को दस अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसके अन्तर्गत नगरों की अवधारणा, सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन, अध्ययन क्षेत्र के चयन का आधार, अध्ययन के उद्देश्य, सम्बन्धित परिकल्पनायें, शोध–विधि तंत्र की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है।

दूसरा अध्याय जनपद का भौगोलिक स्वरूप है जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र का परिचय, जनपद की भौतिक पृष्ठभूमि, आर्थिक संरचना एवं सामाजिक स्वरूप का उल्लेख किया गया है।

तीसरा अध्याय नगरों के उद्भव एवं विकास पर आधारित है। इसके अन्तर्गत नगरों का उद्भव, नगरों का ऐतिहासिक काल विभाजन, नगरों का स्थानिक विस्तार एवं नगरों की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन किया गया है।

चौथे अध्याय में नगरीकरण की प्रवृत्तियां एवं जनांकिकीय अभिलक्षणों को परिलक्षित किया गया है जिसके अन्तर्गत नगरीय वृद्धि प्रतिरूप, नगरीय श्रेणी और कोटि में परिवर्तन, नगरों का जनघनत्व, स्त्री–पुरुष अनुपात, आयु–संरचना, व्यावसायिक प्रतिरूप, कार्यशील जनसंख्या, जन्म एवं मृत्यु दर तथा जनसंख्या प्रक्षेपण का उल्लेख किया गया है।

पांचवां अध्याय नगरों के स्थानिक तंत्र विश्लेषण पर आधारित है जिसमें अवधारणा, प्रस्तुत परिकल्पनायें, दूरी–आकार सम्बन्ध, कोटि आकार सम्बन्ध, परिवहन तंत्र, अभिगम्यता एवं मार्ग सूचकांक (Detour Index) का उल्लेख किया गया है।

छठवें अध्याय में नागरिक सुविधाओं का प्रारूप बतलाया गया है जिसके अन्तर्गत सामुदायिक सुविधायें, नागरिक सुविधायें एवं आर्थिक सुविधाओं के प्रारूप को परिलक्षित किया गया है।

सातवां अध्याय कार्यात्मक संरचना और पादानुक्रमण पर आधारित है जिसके अन्तर्गत प्रकार्यात्मक तंत्र, पादानुक्रम की अवधारणा, नगरों में सेवाओं का पादानुक्रम, केन्द्रीयता, प्रमुख परिकल्पनायें, प्रयुक्त विधियां एवं प्रणाली, कार्यात्मक प्रभार विधि, स्केलोग्राम विधि एवं सिटिलमेन्ट इन्डैक्स विधि आदि को सम्मिलित किया गया है।

आठवां अध्याय ग्रामीण–नगरीय अन्तर्सम्बन्ध पर आधारित है जिसके अन्तर्गत ग्रामीण–नगरीय सम्बन्धों की अवधारणा, प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन, सीमांकन की प्रविधियां, नगरों के आदर्श सेवा क्षेत्र, रैली की विच्छेद–बिन्दु विधि, गुरूत्व मॉडल विधि का प्रयोग एवं नगर केन्द्रों का प्रभाव क्षेत्र सम्मिलित हैं।

अध्याय नौ नगरों की समस्याओं एवं नियोजन पर आधारित है। इसके अन्तर्गत नगरों की समस्यायें, भूमि की समस्या, आवास की समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या, नाली–सीवर की समस्या, मलोत्सर्जन की समस्या, मलिन बस्तियों की समस्या, विद्युत आपूर्ति एवं प्रकाश की समस्या, प्रदूषण की समस्या, दस्यु समस्या, मलिन बस्ती सुधार योजना, अधिवासी अध्ययन और नियोजन हेतु आवश्यक सुझाव, वर्तमान भूमि उपयोग का अध्ययन एवं वांछित नियोजन आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

दसवां एवं अन्तिम अध्याय सम्पूर्ण शोध–ग्रन्थ के सारांश एवं निष्कर्ष पर आधारित है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण उपलब्धियों की समीक्षा, सारांश एवं नगरों के विकास हेतु सुझाव को सम्मिलित किया गया है।

Reference/सन्दर्भ

1	Dikinson, R.E.	The West European City, A Geographical Integration, London, p. 174
2.	Taylor, D.R.F.	The Role of the smaller urban places in development, A case study from Kenya, African urban notes, Vol. VI, No. 3, 1972
3	Mayor, HMSC	The Economic Base of Cities, Reading in Urban Geography, Chicago, p. 215
4.	Berry, B.J.L.,	"Geography of Market Centres & Retail Distribution", New Jersey, Prentice Hall, INC, Englewood Cliff, 1967.
5.	Jafferson, M	Distribution of world's city folk, Geographical reivew, vol XXI, 1981, p. 455
6.	Christaller, W.,	"Central Places in Southern Germony, U.S.A., 1966.
7.	Taylor, D.R.F.	The Role of the smaller urban places in development, A case study from Kenya, African urban notes, Vol. VI, No. 3, 1972

8.	Clark, P.J.	Distance to Nearest Neighbour, Major of Spatial Relation in Population Ecology, pp. 44-45
9.	Singh R.L.	Urban Hierarchy in the Umland of Banaras, B.H.U. Journal of Scientific Research, 1956
10.	Bose, A.	The Role of small towns in the urbanisation process of india and pakistan, In readings on Micro Level Planning and Rural Growth Centres (edit) L.K. Sen, NICD, Hyderabad, 1972
11.	Prakashrao, V.L.S.	Regional Aspects of small and mediun sized towns of Trilangana, R.P. C. Project, Planning Commission, Osmania Univerisity, Hyderabad, 1964
12	Mishra, H.N.	Role of small and Intermediate towns in the Regional Development Process, Project Report Presented in the seminar on the role of small and intermediate towns held at Bowcentrum, Holland, Organized by IIED, London, 1982
13.	Singh, K.N.	Changes in the Functional Structure

of some small towns in Eastern Uttar Pradesh, Indian Geographer, VI, 1961, pp. 21-40

14. Sundaram, K.V. et.al. Some Aspects of Demographic Analysis of Mediun size Towns in India, Nagarlok, Vol. 8, No. 3, 1978

15. Vishwakarma, R.K. et.al. IDSMT : Progamme Inplementationm, Its Evaluation an Impact Analysis, IIPA, New Delhi, 1984, (MiMeo), p. 1